18/07/2020

Educational Psychology

Paper III

B.A. II (Hons.)

Discuss the different types of guidance.

निर्देशन के विभिन्न प्रकारों का वर्णन करें।

विभिन्न विद्वानों ने निर्देशन के अलग-अलग प्रकारों का उल्लेख किया है। परन्तु साधारण तौर पर इसके तीन प्रकारों का उल्लेख किया जा सकता है।

1. **व्यक्तिगत निर्देशन (personal guidance) –**
   व्यक्तिगत निर्देशन वैसे निर्देशन को कहा जाता है जिसमे निर्देशक किसी की व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान में सहायक होता है। सहायक का मतलब यह नहीं की उसकी समस्याओं का समाधान करता है, बल्कि उसे अपनी समस्याओं को समझने तथा समाधान करने में मात्र सहायता करता है या मार्गदर्शन करता है। छात्र के सामने निर्देशक ऐसा वातावरण उत्पन्न कर देता है की वह अपनी योग्यताओं एवं उपलब्ध साधनों और वाह्य परिस्थितियों की कठिनाइयों एवं सुविधाओं के बीच एकरूपता कायम करने तथा अभियोजित होने में सक्षम होता है।

2. **व्यावसायिक निर्देशन (vocational guidance) –**
   व्यावसायिक क्षेत्रों में किये गए व्यवहार को व्यावसायिक निर्देशन कहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति की योग्यता भिन्न-भिन्न प्रकार की होती है। इस लिए किसी कार्य को करने के लिए सभी व्यक्ति योग्य नहीं हो सकते हैं। इसमें व्यक्ति की शारीरिक एवं मानसिक योग्यता काम करती है। अतः उचित कार्य के लिए उचित व्यक्ति का चुनाव किया जाता है। इसी प्रकार व्यक्ति के लिए उचित कार्य की तलाश की जाती है। ऐसा नहीं होने से व्यक्ति की कार्य क्षमता प्रभावित हो जाती है। इसी समस्या का समाधान में निर्देशन का प्रयोग किया जाता है। निर्देशन की प्रक्रिया के द्वारा उचित व्यक्ति के लिए कार्य के चुनाव में मदद मिलती है। इस प्रकार स्पष्ट है कि व्यावसायिक निर्देशन वह प्रक्रिया है जो व्यक्ति को उचित व्यवसाय के चुनाव में उसकी क्षमताओं तथा व्यावसायिक सुविधाओं को ध्यान में रखते हुए सहयोग करती है।
   व्यावसायिक निर्देशन का सम्बन्ध शिक्षा मनोविज्ञान से भी है। स्कूलों में शिक्षक व्यावसायिक निर्देशन देने का कार्य करते है। वे बच्चों को विषयों के चुनाव में उसकी क्षमता, अभिरुचि, योग्यता आदि को ध्यान में रखते हुए निर्देशन देते है। अतः कह सकते हैं की शैक्षिक निर्देशन में व्यावसायिक निर्देशन भी शामिल रहता है।

3. शैक्षणिक निर्देशन (educational guidance) –

शिक्षा के क्षेत्र में निर्देशन का सर्वाधिक महत्व है। इस क्षेत्र में जो निर्देशन दिया जाता है उसे शैक्षणिक निर्देशन के नाम से जानते हैं। विद्यार्थियों में व्यक्तिक भिन्नता होती है। अर्थार्थ वे बुद्धि, क्षमता, अभिरुचि, व्यक्तित्व आदि में एक दूसरे से भिन्न होते है।

विभिन्न प्रकार के शिक्षण के लिए अलग-अलग अभिरुचि, योग्यता की आवश्यकता होती है। बच्चों को जो शिक्षा दी जाती है वह तभी सफल हो सकती है जब शिक्षार्थी की बुद्धि, क्षमता, अभिरुचि आदि उसके अनुकूल हो। बच्चे क्यूंकि नादान होते हैं अतः वे इन बातों को नहीं समझ पाते हैं। ऐसे बच्चों को मार्गदर्शन की विशेष आवश्यकता होती है। बिना मार्गदर्शन के वे भटक सकते हैं। बालकों की शिक्षा ऐसी अवस्था में प्रभावशाली होगी जब उसकी योग्यता, बुद्धि, अभिरुचि के अनुकूल हो। इस तथ्य को अभिभावक तो क्या शिक्षक भी नहीं समझ पाते हैं। इस लिए वे विषयों के चुनाव में गलती कर बैठते हैं। फलतः अत्यधिक परिश्रम करने के बावजूद भी वे सफल नहीं हो पाते हैं। निर्देशन से उसके विषयों के चुनाव में सहायता मिलती है। कोई बालक सभी गुणों में प्रभावशाली नहीं हो सकता है बल्कि उसमें कुछ ही गुण होते हैं जो विशिष्ट होते हैं बाकी गुण सामान्य होता है। बच्चों के विशिष्ट गुणों की पहचान कर उसी क्षेत्र में निर्देशन दिया जाये और शिक्षा की व्यवस्था की जाये तो निश्चय ही वह शिक्षा प्रभावशाली होगी। शैक्षिक निर्देशन के सम्बन्ध में उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए हम कह सकते हैं कि शैक्षिक निर्देशन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें छात्रों को उनकी मानसिक शक्तियों को समझने, उसकी विशिष्टता की खोज करने, उसी के अनुसार शिक्षा सम्बन्धी चुनाव करने तथा उसके अनुकूल करने में सहायता प्रदान करता है। Jones ने इसी अर्थ में शैक्षिक निर्देशन के सम्बन्ध में कहा है –

"शैक्षिक निर्देशन का तात्पर्य उस व्यक्तिगत सहायता से है जो छात्रों को इस उद्देश्य से प्रदान की जाती है कि वे अपने लिए उपयुक्त विद्यालय, पाठ्यक्रम, पाठ्यविषय एवं विद्यालयी जीवन का चयन कर सकें और उनसे समायोजन कर सकें।"

Jones की परिभाषा का विश्लेषण करने पर निम्नलिखित बातें स्पष्ट होती हैं-

- शैक्षिक निर्देशन के माध्यम से छात्रों की शिक्षा सम्बन्धी सहायता मिलती है। छात्रों को इससे विषयों के चुनाव करने में विशेष सहयोग प्राप्त होता है।
- प्रत्येक छात्र बुद्धि, योग्यता, शारीरिक एवं मानसिक क्षमता की दृष्टि से एक दूसरे से भिन्न होते हैं। निर्देशन के माध्यम से उसकी विभिन्न मानसिक शक्तियों को समझने में मदद मिलती है।
- छात्रों के विभिन्न शक्तियों, मेधा, अभिरुचि आदि के जानकारी प्राप्त करने में निर्देशन का सहारा लिया जाता है। यह पता लगाया जाता है कि कौन सा गुण उसमे विशिष्ट है।
- उनकी विभिन्न क्षमताओं, अभिरुचि के अनुकूल विषय का चुनाव कर उसके शिक्षा के लिए उचित प्रबंध का सलाह दिया जाता है।
- छात्रों को निर्देशन तब तक दिया जाता है जब तक वह अपने शैक्षिक चुनाव के साथ अनुकूलन कर के अपने तथा समाज के लिए उपयोगी नहीं साबित हो जाता है।

Dr. Hena Hussain

Asst. Professor

Department of Psychology

Oriental College, Patna City

WhatsApp No. – 9334067986

Email-drhenahussain@gmail.com